# CHAPTER 5

# सहर्ष स्वीकारा है

**PAGE 32, प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ**

**12:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ :1**

**टिप्पणी कीजिएः गरबीली गरीबी, भीतर की सरिता, बहलाती सहलाती आत्मीयता, ममता के बादल**।

**उत्तर:**

**1. गरबीली गरीबी** गरीबी को सम्मानजनक स्थान या महत्व देने के विचार और भावना से प्रेरित होकर, कवि ने गरीबी को गरबीली कहा है। अधिकतर गरीब व्यक्ति बिना बुलाए मुसीबत, निराशा और दुःख को अपने पास पाता है। गजानन जैसे कुछ कवि हैं जिनके लिए गरीबी दुःख का कारण नहीं है। बल्कि, वे खुद पर गर्व करके जीवन की चुनौतियों का सामना करते हैं। उन्होंने हर गरीब को गरबीली कहकर सम्मान देने की कोशिश की है।

**2.भीतर की सरिता** कवि के दिल में बहने वाली कोमल और प्यार भरी भावना को संदर्भित करती है। प्रेम की भावना मानव और उसके अंतर्संबंधों का पोषण करती है जैसे कि सरिता का अर्थ है नदी मानव जीवन का पोषण करती है। कवि ने आंतरिक सरिता का नाम दिया है जो एक पवित्र नदी की तरह है जो लोगों और उनके रिश्तों को जीवन देती है।

**3.बहलाती सहलाती आत्मीयता-** किसी व्यक्ति की आत्मीयता के कारण दिल को जो खुशी मिलती है। कवि को अपने प्रिय से अंतरंग प्रेम मिलता है। कवि के दिल की स्थिति को समझने के द्वारा, वह विभिन्न तरीकों से उसका मनोरंजन करने में सक्षम है।

**4.ममता के बादल-** प्रेम जहाँ होता है वहां ममता तो स्वाभाविक रूप से विद्यमान होती है। अपनत्व के चरम पर ममता प्रस्फुटित होती है।

**12:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ :2**

**इस कविता में और भी टिप्पणी -योग्य पद -प्रयोग हैं। ऐसे किसी एक प्रयोग का अपनी ओर से उल्लेख कर उस पर टिप्पणी करें।**

**उत्तर**:

**1.“मीठे पानी का सोता”** टिपण्णी-योग्य पद-प्रयोग है । इसमें कवि अपने दिल की बात और प्यार की भावनाओं को मीठे पानी के झरने, एक फव्वारे के रूप में कह रहा है।

2. “**विचार-वैभव”** - एक आदमी को अमीर बनाने के लिए, न केवल धन होना आवश्यक है, बल्कि एक व्यक्ति भी विचारों का धनी हो सकता है यही वास्तविक गौरव है।

**12:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ :3**

**व्याख्या कीजिएः**

**जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है**

**जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है**

**दिल में क्या झरना है?**

**मीठे पानी का सोता है**

**भीतर वह, ऊपर तुम**

**मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर**

**मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है!**

**उपर्युक्त पंक्तियों की व्याख्या करते हुए यह बताइए कि यहाँ चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार-अमावस्या में नहाने की बात क्यों की गई है?**

**उत्तर**: कवि ने अपने प्रिय की आभा के साथ हमेशा प्यार की सुखद भावनाओं से घिरा होने की स्थिति का चित्रण किया है। इन खूबसूरत यादों से घिरा होना कवि के लिए असहनीय हो गया है क्योंकि वह इस आनंद से वंचित है। कवि को डर भी सताता रहता है। यह कवि की इच्छा है कि वह प्रियतम के प्रेम से मुक्त होकर आत्मनिर्भर बने और अपने व्यक्तित्व का विकास करे। इसलिए कवि चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अन्धकार-अमावस्या में नहाने की बात करते हैं।

**12:1:5: प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ :4**

**तुम्हें भूल जाने की**
**दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या**
**शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं**
**झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं**
**इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित**
**रहने का रमणीय यह उजेला अब**

**सहा नहीं जाता है।**

**(क) यहाँ अंधकार-अमावस्या के लिए क्या विशेषण इस्तेमाल किया गया है उससे विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ता है?**

**(ख) कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में किस स्थिति को अमावस्या कहा है?**

**(ग) इस स्थिति से ठीक विपरीत ठहरने वाली कौन-सी स्थिति कविता में व्यक्त हुई है? इस वैपरीत्य को व्यक्त करने वाले शब्द का व्याख्यापूर्वक उल्लेख करें।**

**(घ) कवि अपने संबोध्य (जिसको कविता संबंधित है कविता का 'तुम') को पूरी तरह भूल जाना चाहता है, इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए क्या युक्ति अपनाई है? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।**

**उत्तर:**

(**क**) यहाँ अंधकार अमावस्या के लिए 'दक्षिणी-ध्रुव' विशेषण का प्रयोग किया गया है, अतः विशेष्य में व्याप्त कालिमा और भी काली मालूम होती है।दक्षिणी ध्रुव पृथ्वी का वो भाग है जहाँ 6 महीने तक सूर्योदय होता ही नहीं,इसलिए वहाँ अंतहीन अन्धकार व्याप्त रहता है।

(**ख**) दुःख के समय को कवि ने व्यक्तिगत सन्दर्भ में अमावस्या कहा है।अन्धकार जिस तरह पूरे संसार को ढँक लेता है,वैसे ही दुःख रूपी अंधकार कवि के शरीर और आत्मा को ढंकने के लिए आतुर रहता है।

(**ग**) कविता में "वह रमणीय उजेला को झेले और उसी में नहा ले"स्थिति का वर्णन पहले किया गया है ।उद्धृत पंक्तियों में 'अंधकार-अमावस्या ' की बात की गई है । परन्तु पंक्ति में प्रयुक्त जो 'उजेला ' शब्द है वह इसके ठीक विपरीत स्थिति है । कवि के जीवन में जिस तरह दुःख रूपी अंधकार-अमावस्या कवि के जीवन में व्याप्त है,वैसे ही प्रेमिका का सुन्दर चेहरा उस प्रकाश की भांति है जो उसके जीवन में अँधेरे को गहराने नहीं देता है।प्रेमिका का चेहरा उसे प्रकाशित करता रहता है।

(**घ**) कवि कहते हैं कि वे अपनी प्रियतमा को पूर्ण रूप से भूल जाना चाहते हैं। उसके वियोग के अन्धकार को अपने शरीर और हृदय पर सहते और झेलते हुए कवि उस अन्धकार में नहा लेना चाहते हैं जिससे कि उनके प्रिय की कोई भी स्मृति उनके हृदय में शेष ना रहे । इस तरह कवि गजानन वियोग की अंधकार-अमावस्या में डूब जाना चाहते हैं।

**12:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ :5**

**बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है- और कविता के शीर्षक सहर्ष स्वीकारा है  में आप कैसे अंतर्विरोध पाते हैं। चर्चा कीजिए।**

**उत्तर:** इस पंक्ति में व्याप्त अंतर्विरोध इस प्रकार दिखता है कि एक ओर कवि अपनी प्रियतमा के आत्मीय सबंध से प्रसन्न दिखाई देते हैं।उन्हें ऐसा लगता है कि उनकी प्रियतमा का प्रेम उनके जीवन में समां चुका है,उसके चेहरे मात्र से अपने जीवन को प्रकाशमान मानते हैं  ।किन्तु अगले ही क्षण उन्हें प्रेमिका का अधिक बहलाना और सहलाना कष्टकर प्रतीत होता है,अखरने लगता है परन्तु इसके बिना जीना भी संभव नहीं लगता।इसी प्रकार की स्थिति अंतर्विरोध कहलाती है जो इस कविता में सहज प्राप्य है।

**PAGE 33, अभ्यास - कविता के आसपास**

**12:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:1**

अतिशय मोह भी क्या त्रास का कारक है ? माँ का दूध छूटने का कष्ट जैसे एक ज़रूरी कष्ट है , वैसे ही कुछ और ज़रूरी कष्टों की सूची बनाएँ।

**उत्तर:** जब हमें किसी वस्तु से इतना लगाव, प्यार या आदत हो जाती है कि उससे दूर महसूस करने का एक क्षण भी दुखदायी होता है, तो यह अतिश्योक्तिपूर्ण है। जिस प्रकार बच्चे को माँ के दूध और एक दिन के लिए अत्यधिक लगाव होता है। इससे मुक्त होने पर दर्द होता है। इसी तरह, एक आदमी को जीवन में बंधी चीजों को छोड़ने का दर्द सहना पड़ता है।

**12:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:2**

**प्रेरणा शब्द पर सोचिए और उसके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए जीवन के वे प्रसंग याद कीजिए जब माता-पिता, दीदी-भैया, शिक्षक या कोई महापुरुष/महानारी आपके अँधेरे क्षणों में प्रकाश भर गए।**

**उत्तर:** प्रेरणा बहुत ही आवश्यक शब्द है। किसी व्यक्ति की निराशा के समय प्रेरणा उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करती है।

मैंने भी एक प्रतियोगिता परीक्षा में असफलता का स्वाद लिया था और घर आकर खूब रोया था,निराशा से भर उठा था कि तभी मेरी माँ और मेरे नाना जी ने बारी-बारी से मुझे अपने पास बिठाया और मुझे कई प्रेरक कहानियां और घटनाएँ सुनाई,और बताया कि असफलता का अर्थ ये नहीं कि तुम उस लायक नहीं,बल्कि उसका अर्थ है कि कहीं ना कहीं परिश्रम में कमी रह गई।असफलता ही एकमात्र वो कुंजी अर्थात चाभी है जो सफलता के द्वार को खोलती है ।प्रयास करते रहो क्योंकि प्रयास और कड़ी मेहनत का कोई विकल्प ही नहीं होता ।और सचमुच इन बातों का मुझपर गहरा प्रभाव पड़ा और अब मैं किसी भी परिस्थिति में निराश नहीं होता।

**12:1:5:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:3**

**'भय' शब्द पर सोचिए। सोचिए कि मन में किन -किन चीज़ों का भय बैठा है ? उससे निबटने के लिए आप क्या करते हैं और कवि की मनःस्थिति से अपनी मनःस्थिति की तुलना कीजिए।**

**उत्तर:** भय सबको लगता है परन्तु सबका भय अलग अलग होता है। किसी को अँधेरे से भय लगता है तो किसी को कोई चीज खो जाने का भय। सबके पास अपना अलग अलग भय है। मुझे अँधेरे से दर लगता था जो मेरी मा ने मुझे प्रेरणा देकर दूर किया।